आज़ादी का अमृत महोत्सव

जनसम्पर्क कटनी

चलिए कटनी की सैर पर...

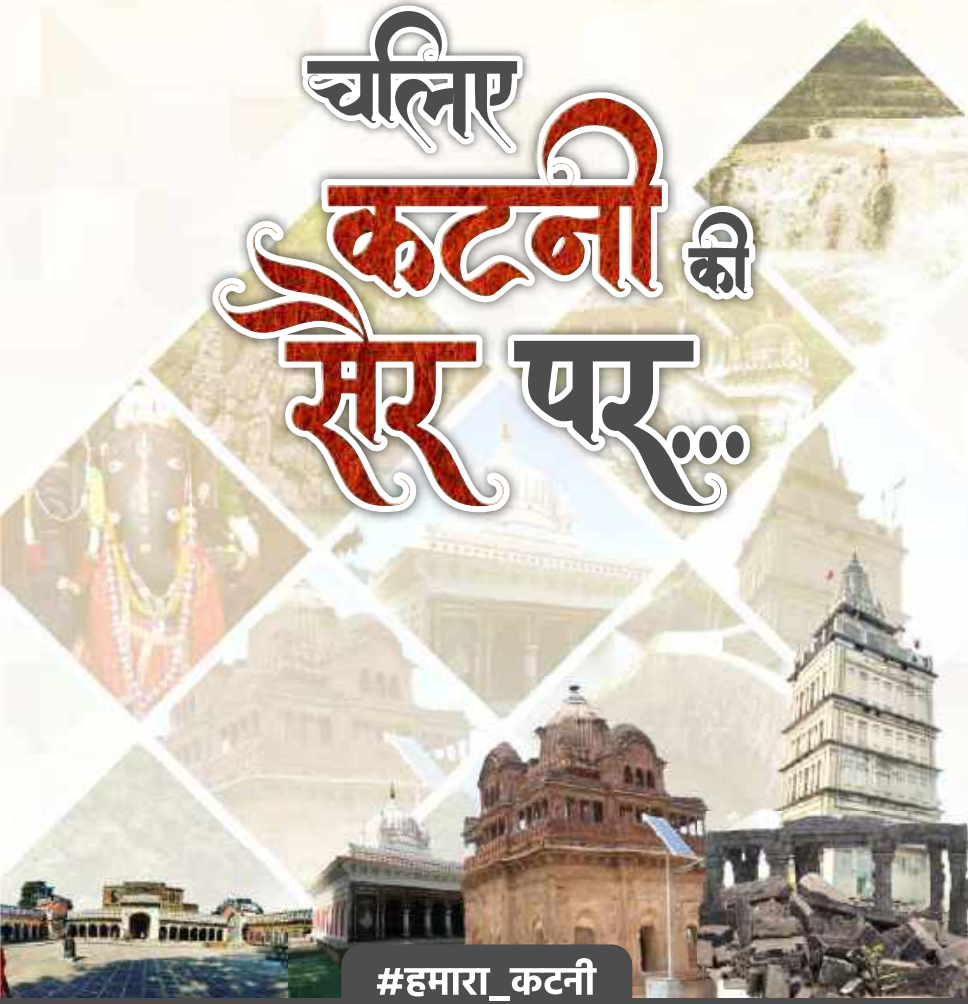

#हमारा_कटनी

जिला जनसम्पर्क कार्यालय - कटनी

चलिए कटनी की सैर पर...

चलिए कटनी की सैर पर...

जनसम्पर्क कटनी

मार्गदर्शन

डॉ. सुदाम खाड़े, आयुक्त, जनसम्पर्क मध्यप्रदेश

श्री आशुतोष प्रताप सिंह, संचालक, जनसम्पर्क मध्यप्रदेश

निर्देशन

श्री प्रियंक मिश्रा

कलेक्टर, कटनी

परिकल्पना एवं संपादन

श्री सुनील वर्मा

जिला जनसम्पर्क अधिकारी, कटनी

विशेष सहयोग

श्री राजेन्द्र सिंह ठाकुर
श्री मुकेश तिवारी
श्री अभिषेक शर्मा
सुश्री सर्जना चतुर्वेदी
श्री अभिषेक मिश्रा
श्री लालजी शर्मा
श्री विजय सूर्यवंशी
श्री अनूप दुबे
श्री दिनेश तोमर

प्रस्तुति

जिला जनसम्पर्क कार्यालय, कटनी

अनुक्रमणिका

- विश्व पर्यटन दिवस पर विशेष 01
- करौंदी में देश का भौगौलिक केन्द्र बिंदु 03
- पुरातत्व महत्व व आस्था का केंद्र रुपनाथधाम 04
- विजयराघवगढ़ के किले से शुरु हुई अंग्रेजों के खिलाफ बगावत 05
- कारीतलाई में 5वीं सदी की विष्णु वाराह की प्रतिमा है आकर्षण 06
- आस्था और विश्वास का प्रतीक मुहांस का संकटमोचन मंदिर 07
- बांस के जंगल से प्रकट हुई थीं मां जालपा 08
- कौमी एकता की मिसाल है विजयनाथधाम मंदिर 09
- पत्थरों से बना है 100 वर्ष पुराना ऊमरडोली डेम 10
- शानदार नक्काशी का उदाहरण है बांधा इमलाज मंदिर 11
- पचमठा धाम के सांवले गणेश 12
- कुंसरी की काली माता 12
- पाली में विराजी हैं 24 भुजी विरासिन माता 13
- ब्रिटिश शासनकाल में बनी थी महादेवी माता की मढ़िया 14
- मां शारदा देवी मंदिर विजयराघवगढ़ 15
- चितरंजन शैल वन पार्क 16
- शांति चाहिए तो आइए एकांत वन 17
- 60 एकड़ में फैला है माधवनगर का जागृति पार्क 18
- सुरम्य वादियों में बना है सुरम्य पार्क 19
- वसुधा फाल 20
- खुसरा की खूबसूरत वादियां और प्राकृतिक कुंड 21
- कौमी एकता का प्रतीक पीरबाबा, हनुमान मंदिर 22
- बड़ेरा चतुर्युग मंदिर 22
- कर्नल स्लीमन ने बसाया था स्लीमनाबाद 23
- तिगवां में है गुप्तकालीन मंदिर 24
- घुघरा में उठाएं प्राकृतिक स्थल का आनंद 25
- शहर के नजदीक रहता है प्रवासी पक्षियों का डेरा 26
- आस्था का केन्द्र हरे माधव दरबार 27
- श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र बहोरीबंद 27
- 85 मंदिर, 13 बावड़ी से घिरी है पुष्पावती नगरी बिलहरी 28
- लोगों को आकर्षित करता है बरही का कोनिया धाम 29
- प्रकृति प्रेमी हैं तो आइए शाहडार का जंगल 30
- और भी हैं अनुपम स्थान... 31

दुनिया एक किताब है, और जो यात्रा नहीं करते हैं, वो सिर्फ एक पन्ना पढ़ते हैं। अफ्रीकी दार्शनिक सेंट एगस्टीन का यह कथन व्यक्ति के जीवन में यात्रा के महत्व को दर्शाता है। पूरी मानव जाति का विकास ही यात्रा पर आधारित है। इतिहास में हम पढ़ते हैं कि भारत के प्रसिद्ध मसालों की तलाश में ही 1498 में पुर्तगाली नागरिक वोस्कोडिगामा ने यूरोपियों के लिए भारत के समुद्री मार्ग की खोज की थी। यात्राओं का इतिहास अनंत है क्योंकि प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन काल में यात्राएं करता है।

यात्राएं हमारे जीवन में हमें बहुत कुछ सिखाती हैं, जो जीवन को पुराने समय से लेकर अब तक यदि हम देखें तो मनुष्य यात्राओं के माध्यम से ही आगे बढ़ा और उसने सीखा है। स्वामी विवेकानंद ने ऐतिहासिक शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन की यात्रा से संपूर्ण विश्व में भारतीय दर्शन के महत्व को बढ़ाया तो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने छुआछूत और रंगभेद को भी यात्रा के माध्यम से जाना। यानी अपने जीवन में बड़े परिवर्तन यात्राओं से होते हैं। इसलिए जब भी समय मिले हमें पर्यटन का आनंद लेना चाहिए यह जीवन में सीखने और समझने का एक बहुत अच्छा माध्यम है। विश्व पर्यटन दिवस के लिए 27 सितंबर का दिन चुना गया क्योंकि इस दिन 1970 में यू.एन.डब्ल्यू.टी.ओ. के कानून प्रभाव में आए थे जिसे विश्व पर्यटन के क्षेत्र में बहुत बड़ा मील का पत्थर माना जाता है, इसका लक्ष्य विश्व पर्यटन की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में अन्तरराष्ट्रीय समुदायों के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक मूल्यों को वैश्विक स्तर पर कैसे प्रभावित करता है के बारे में लोगों को जागरुक करना है। दुनिया देखने की शुरुआत हमें अपने आसपास की जगहों से ही करनी चाहिए।

हम बात करें अपने कटनी जिले की जिसे मुडवारा के नाम से भी जाना जाता है। कटनी का संभागीय मुख्यालय जबलपुर है। 28 मई 1998 को कटनी को जिले के रुप में घोषित किया गया है। कटनी में कटनी नदी बहती है, जो पीने के पानी का मुख्य स्त्रोत है। कटनी जिले की तहसील कटनी शहर, कटनी ग्रामीण, रीठी, बड़वारा, बहोरीबंद, विजयराघवगढ, ढीमरखेड़ा, बरही व स्लीमनाबाद हैं। कटनी जिले की सीमाएं उमरिया, जबलपुर, दमोह, पन्ना और सतना जिले की सीमाओं को छूती हैं। कटनी जिले में बहुत सारी ऐतिहासिक और प्राकृतिक जगह है, जहां पर जाकर आप न केवल सैर कर सकते हैं बल्कि इनके महत्व के बारे में भी जान सकते हैं। जैसे कि विजयराघवगढ़ का किला एक प्राचीन किला है। यह किला कटनी जिले की विजयराघवगढ़ तहसील में स्थित है। विजयराघवगढ़ किले का आकार आयताकार है। विजयराघवगढ़ किला का निर्माण 1826 में किया गया था और यह महल बलुआ पत्थर से बना हुआ है। इसी तरह राधा कृष्ण मंदिर कटनी जिलेका प्रसिध्द पर्यटन स्थल है। राधा कृष्ण मंदिर बांधा इमलाज गांव में स्थित है तो जिले का कटाये घाट एक प्राकृतिक स्थल है।

जिले में आपको हनुमानजी, पंच मुखी हनुमानजी, दुर्गाजी, गणेश जी और राधा कृष्ण की मूर्ति देखने मिलती है। कामकंदला की ऐतिहासिक प्रेम गाथा को बयां करती धरोहर कटनी जिले से 15 किमी. की दूरी पर बिलहरी में स्थित है। 85 मंदिरों से घिरे बिलहरी में आपको अलग-अलग प्राचीन बावड़ी भी देखने के लिए मिलती हैं। घुघरा नर्सरी जलप्रपात एक खूबसूरत जलप्रपात है, यह छोटा जलप्रपात है, मगर खूबसूरत है। प्राचीन विष्णु वाराह मंदिर कटनी जिले का एक दर्शनीय स्थल है। यह एक ऐतिहासिक जगह है। यहां पर आपको बहुत सारी पत्थर की प्रतिमाएं देखने के लिए मिलती है। यहां पर विष्णु भगवान के वाराह अवतार की प्रतिमा है, जो पत्थर की बनी है। हमनें प्रकृति की खूबसूरती और ऐतिहासिक समृद्धता से भरी जिले के प्रमुख पर्यटन के बिखरे बेशकीमती मोतियों को इस किताब रुपी माला में पिरोने का प्रयास किया है।

सुनील वर्मा
जिला जनसंपर्क अधिकारी

विश्व पर्यटन दिवस पर विशेष

- **पुरातत्व महत्व व धार्मिक ऐतिहासिकता को संजोए हैं कई पर्यटन स्थल**
- **कहीं अशोक के शिलालेख, कहीं आज भी गर्भ में छिपे हैं रहस्य**
- **प्रकृति की अनुपम छटा निहारने पहुंचते हैं लोग, वर्षों से बने लोगों की पसंद**

भारत देश पुरातत्व महत्व की धरोहरों और धार्मिक पर्यटन स्थलों से भरपूर है। इस मामले में कटनी जिला भी पीछे नहीं है। जिले में ऐसे कई स्थल हैं, जिनका अपना धार्मिक व ऐतिहासिक महत्व है तो कई स्थल ऐसे भी हैं, जिनके गर्भ में अभी भी रहस्य छिपे हैं। प्रकृति की गोद में बसे जिले के ये स्थान वर्षों से लोगों की पसंद बने हैं। सालभर इन स्थानों में लोगों का परिवार व मित्रों के साथ आना-जाना होता है। बहोरीबंद के रुपनाथ धाम में अशोक शिलालेख पुरातन संस्कृति को याद कराते हैं तो विजयराघवगढ़ का किला आजादी की लड़ाई का प्रतीक है। बिलहरी के ऐतिहासिक व धार्मिक स्थलों में पुरानी कारीगरी की झलक देखने को मिलती है तो बाणसागर के डूब क्षेत्र में शामिल कोनिया धाम अद्भुत आनंद प्रदान करता है। खुसरा नैंगवा के जंगलों में प्राकृतिक कुंड के साथ प्रकृति की अनुपम छटा लोगों के मन में शांति भरती है। यहीं पर सैकड़ों फीट ऊंचाई से गिरता प्राकृतिक झरना लोगों को लुभाता है। अंग्रेज स्लीमन के नाम पर बसा स्लीमनाबाद और देश का भौगोलिक केन्द्र बिंदु करौंदी भी पर्यटकों की खास पसंद रहा है। पर्यटन की संभावनाओं को संजोए जिले के कई स्थानों की अपनी-अपनी अनूठी कहानियां हैं।

धार्मिक पर्यटनों की बात करें तो कटनी जिला पुराने व ऐतिहासिक मंदिरों का खजाना है। विजयराघवगढ़ में मां शारदा देवी मैहर की बड़ी बहन मां शारदा के रुप में ही विराजित हैं तो यहीं पर पचमठा धाम में काले पत्थर की गणेश प्रतिमा अपने आप में अद्भुत है। बहोरीबंद के रुपनाथधाम में गुफा में विराजे भगवान शिव व प्राकृतिक कुंड की बात करें या बहोरीबंद के ही तिगवां में स्थित पुरातत्व धरोधरों के बीच विराजित मां शारदा की, सभी स्थानों पर पहुंचकर लोगों के मन में असीम शांति का अनुभव होता है।

ढीमरखेड़ा के जंगल में मां विरासिन माता और माता महादेवी का स्थान धार्मिक महत्व के साथ प्रकृति की अनुपम देन है। कारीतलाई का विष्णु वराह मंदिर हो या बिलहरी माता के कई रुपों का पुरातन मंदिर इनके रहस्य अभी पूरी तरह से सामने नहीं आ पाए हैं। मुहांस का संकटमोचन हनुमान मंदिर और बांधा इमलाज का श्री राधा कृष्ण मंदिर अपने आप में रहस्य का खजाना है।

जबलपुर, उमरिया, सतना, पन्ना, दमोह की सीमाओं से लगे कटनी जिले के सिर्फ ग्रामीण क्षेत्र ही पुरातत्व, धार्मिक महत्व से भरपूर नहीं हैं बल्कि जिला मुख्यालय में ही पर्यटन की संभावनाएं विद्यमान हैं। वर्षों पुराने शैल चित्रों का खजाना चितरंजन पार्क और उससे लगा एकांत वन व कटाएघाट की सुरम्य वादियां अपने आप लोगों को आकर्षित करती हैं। धार्मिक दृष्टि से भी जिला मुख्यालय का अपना महत्व है। बांस के जंगल से प्रकट हुई मां जालपा यहां पर विराजमान हैं तो पहाड़ी पर बने विश्राम बाबा काली मंदिर, दक्षिणमुखी हनुमान मंदिर का धार्मिक दृष्टि से अपना अलग ही महत्व है। रेलवे के माध्यम से पांच दिशाओं को जोड़ने वाले कटनी जंक्शन से किसी भी दिशा में जाने और आने के लिए सेवाएं उपलब्ध हैं। दो नेशनल हाइवे से सड़क परिवहन की सहज उपलब्धता चारों दिशाओं से है तो महज 100 किमी. की दूरी पर स्थित जबलपुर के लिए हवाई सुविधा भी उपलब्ध है।

■■

करौंदी में देश का भौगौलिक केन्द्र बिंदु

भौगोलिक दृष्टि से कटनी जिले की ढीमरखेड़ा तहसील का करौंदी गांव का अपना महत्व है। करीब 200 की आबादी वाले गांव को भारत का भौगोलिक केंद्र बिंदु माना जाता है। भारत के आठ राज्यों से गुजरने वाली कर्क रेखा इस गांव से गुजरती है। विंध्याचल पर्वत श्रंखला की पहाड़ियों के ढलान में बसे इस गांव को इसी खासियत की वजह से देश का दिल भी कहते हैं। इस स्थान के विकास को लेकर टूरिस्ट मेगा सर्किट में भी शामिल किया गया है। इंजीनियरिंग कॉलेज जबलपुर के संस्थापक प्राचार्य एसपी चक्रवर्ती की अगुवाई में 1956 में इस स्थान की खोज छात्रों ने की थी और उसके बाद इसे भौगोलिक रूप से देश के केंद्र बिंदु के रूप में स्थान मिला। वर्ष 1987 में तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. चंद्रशेखर करौंदी पहुंचे और उसी साल यहां एक स्मारक बनना शुरू हुआ, जिसका निर्माण उसी वर्ष पूरा हुआ। इस जगह के महत्व को देखते हुए महर्षि महेश योगी ने 1995 को यहां से कुछ दूरी पर महर्षि विश्वविद्यालय की स्थापना की। यहां पर देशभर से वेदों का अध्ययन करने छात्र आते हैं।

■■

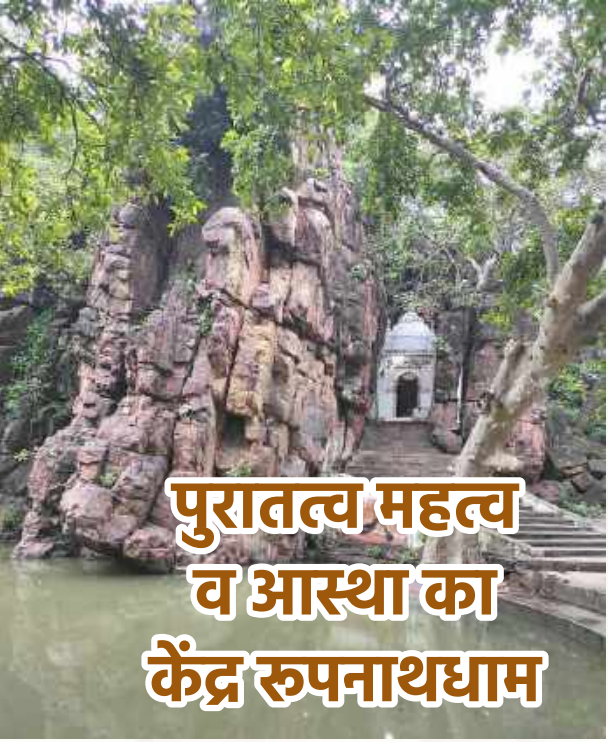

पुरातत्व महत्व व आस्था का केंद्र रुपनाथधाम

प्राकृतिक कुंड़ों में भरा पानी, गुफा में विराजे भगवान भोलेनाथ, चारों ओर अनूठी प्राकृतिक छटा और इन सभी के बीच में सम्राट अशोक के शिलालेख, यह सब मौजूद है, जिले की बहोरीबंद तहसील के ऐतिहासिक स्थल रुपनाथधाम में। पुरातत्व महत्व व लोगों की आस्था का केन्द्र यह स्थल अपने आप में अनूठे रहस्यों से भरा है। पहाड़ी के पत्थरों एक ऊपर एक बने तीन कुंड, विशाल पत्थरों के बीच बनी गुफा और सम्राट अशोक के शिलालेख तीनों को लेकर अलग-अलग चर्चाएं हैं। कहा जाता है कि 232 ईसा पूर्व तक शक्तिशाली भारतीय मौर्य राजवंश के सम्राट अशोक मौर्य (सम्राट अशोक) जिले के छोटे से नगर बहोरीबंद के समीप स्थित रुपनाथ में रुके थे। रुपनाथ धाम में उनके रहने व ठहरने सहित कई उपयोगी शिलालेख व उनके माध्यम से कराए गए निर्माण उनके ठहरने का आज भी प्रमाण देते हैं। रुपनाथ धाम में पंचलिंगी शिव प्रतिमा है, जिसे रुपनाथ के नाम से जाना जाता है। यह कैमोर पहाडियों के एक सिरे पर स्थित है। पहाड़ी में सबसे नीचे का कुंड सीता कुंड, मध्य का लक्ष्मण कुंड और सबसे ऊपर भगवान राम का कुंड है। रुपनाथ धाम के पुजारियों के बताए अनुसार यहां को लेकर मान्यता है कि जागेश्वरधाम बांदकपुर के लिए भगवान भोलेनाथ यहीं से गए। प्रकृति की गोद में बसे रुपनाथधाम में कई जिलों से लोग पहुंचते हैं।

■■

विजयराघवगढ़ के किले से शुरु हुई अंग्रेजों के खिलाफ बगावत

ब्रिटिश शासन की बेडियों में जकड़े देश को आजाद कराने में अहम भूमिका निभाने वाले विजयराघवगढ़ रियासत के राजा प्रयागदास के पुत्र राजा सरयूप्रदास का किला आज भी अपनी कहानी बयां करता है। 1857 की क्रांति में इस महायोद्धा ने न सिर्फ अंग्रेजों के खिलाफ बगावत शुरु की थी बल्कि ये वे पहले शख्स हैं, जिन्होंने अंग्रेज कमिश्नर को गोली दागी थी और फिर अंग्रेजों के खिलाफ उठी थी चिंगारी। ऐसी वीरता, शौर्यता, देशभक्त की खान का निवास ऐसा है जो देखते ही बनता है। विश्व विख्यात विजयराघवगढ़ का किला जहां की सुरक्षात्मक बनावट, नक्कासी देखने लायक हैं। 1826 में शुरु हुआ इसका निर्माण कई वर्षों में पूरा हुआ। इस किले की खासियत है कि यह चारो तरफ से बड़ा ही सुरक्षित है। दो ओर से यह नदियों से घिरा है, तीसरी ओर विशाल पहाड़ इसकी रक्षा कर रहा है। यहां पहुंचने वाले लोग इसकी बनावट को देखकर दांतो तले अंगुलिया दबा लेते हैं। इसके अलावा यहां पर विजय के प्रतीक राघव जी का मंदिर, रंगमहल की नक्काशी, रनिवास का आकार, गढ़ी के निर्माण की कलाकृति, दीवारों की नक्काशी देखने लायक है।

कारीतलाई में 5वीं सदी की विष्णु वाराह की प्रतिमा है आकर्षण

जिला मुख्यालय से 42 किमी. की दूरी पर बसा कारीतलाई गांव। यहां पर 5वीं सदी का भगवान विष्णु वराह का अद्भुत मंदिर है। बताया जाता है कि विंध्य पर्वत की कंदराओं में बसा यह गांव कभी कल्चुरी शासकों के बड़े कला केंद्रों में शुमार था। यहां पर मिले पुरावशेष देश-विदेश के संग्रहालयों की शोभा बने हुए हैं। इस गांव में भी न सिर्फ 493 ईसवी के अवशेष विद्यमान हैं बल्कि भगवान गणेश, विष्णु-वाराह, शिव-पार्वती आदि की प्रतिमाएं बोलती प्रतीत होती हैं। खुदाई में यहां बहुत शिलालेख मिले हैं जो आज भी रायपुर संग्रहालय, रानीदुर्गावती संग्रहालय जबलपुर, ग्वालियर सहित अन्य स्थानों पर संरक्षित हैं। यहां को लेकर कहा जाता है कि प्राचीन काल में विंध्य की कंदराओं में रहकर शिल्पकार कला का प्रदर्शन किया करते थे। यहीं से ही खजुराहो का शिल्प संवारा गया था। कल्चुरी महाराज लक्ष्मण राज के मंत्री भट्ट सोमेश्वर दीक्षित द्वारा विष्णु वाराह का मंदिर बनाए जाने के शिलालेख मिले हैं। 493 ईसवी का भी यहां पर ताम्रपत्र का लेख मिला है। इसे पुरात्व विभाग ने संरक्षित कर लिया है। ■■

आस्था और विश्वास का प्रतीक मुहांस का संकटमोचन मंदिर

धार्मिक पर्यटन के साथ वर्षों से लोगों की आस्था और विश्वास का प्रतीक है जिले की रीठी तहसील का संकटमोचन हनुमान मंदिर मुहांस। जिला मुख्यालय से 35 किमी. दूर कटनी-दमोह मार्ग पर स्थित संकटमोचन मंदिर लगभग 40 वर्ष से लोगों के विश्वास का प्रतीक है। लोग यहां पर पूरे देशभर से आते हैं। यहां को लेकर मान्यता है कि मंदिर में मिलने वाली बूटी से टूटी हुई हड्डियां जुड़ जाती हैं। भले ही विज्ञान इसे न मानता हो लेकिन यहां आने वाले लोग वर्षों से इस बात को मानते आ रहे हैं। मुहांस मंदिर के निर्माण की आधारशिला गांववालों के सहयोग से वर्ष 1984 में रखी गई थी और जुलाई 1986 में मंदिर का निर्माण पूरा हुआ। उसके बाद मंदिर परिसर में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए धर्मशाला सहित अन्य सुविधाओं का विस्तार किया गया। इससे पहले छोटे से मंदिर व खेत से पंडा आधारी लाल पटेल आने वाले लोगों को बूटी देते थे। उनकी मृत्यु के बाद उनके बेटे सरमन पटेल ये सेवा कर रहे हैं।

बांस के जंगल से प्रकट हुई थीं मां जालपा

वर्षों से लोगों की आस्था का केन्द्र है शहर के बीचों बीच बना मां जालपा देवी का मंदिर। जहां पर प्रदेश भर से लोग अपनी मनोकामना को लेकर परिवार सहित पहुंचते हैं। बताया जाता है कि माई की प्रतिमा जहां प्रकट हुई थी बहुत पहले वहां पर बांस का घना जंगल था और बांस के जंगल से माता की शिला प्रकट हुई थी। यहां मां जालपा की प्रतिमा के साथ ही 50 वर्ष पूर्व समिति ने जयपुर से मां जालपा, कालका, शारदा की प्रतिमाएं स्थापित की थीं और उसके अलावा चौसठ योगनियों की स्थापना की गई है। नवरात्र के अलावा साल भर यहां भक्तों का तांता लगता है। बुजुर्गों के अनुसार लगभग 250 वर्ष पूर्व रीवा जिले के छोटे से गांव से बिहारीलाल पंडा अचानक घर से कटनी आए थे। उस दौरान जालपा वार्ड में बांस का जंगल हुआ करता था। बताया जाता है कि मां ने उन्हें बुलाया था। जिसके बाद उन्होंने जंगल में वर्तमान मंदिर के स्थान पर सफाई प्रारंभ की तो एक सिल के रूप में मां जालपा की प्रतिमा मिली। जिसकी प्राण प्रतिष्ठा कराई गई और शुरुआत में छोटी सी मढ़िया में मातारानी विराजित की गईं। मंदिर को लेकर लोगों की आस्था बढ़ी और प्रदेश के कई जिलों से आज लोग मंदिर पहुंचते हैं।

कौमी एकता की मिसाल है विजयनाथधाम मंदिर

जिले के धार्मिक पर्यटनों में से एक बरही का विजयनाथधाम कौमी एकता की मिसाल है। यहां पर मंदिर से लगी भूमि है। मंदिर को भूमि बरही के ही एक मुस्लिम परिवार ने दान में दी थी। लगभग 120 वर्ष पुराने इस स्थान को लेकर अलग-अलग किवदंती हैं। बताते हैं कि मंदिर को अंग्रेजी शासन काल में बरही में पदस्थ थानेदार दुर्गा प्रसाद पांडेय ने बनवाया है। बताया जाता है कि उन्हें भगवान भोलेनाथ ने स्वप्न में दर्शन देकर मंदिर स्थल के पास जमीन पर दबे होने की जानकारी दी थी। थानेदार पांडेय ने स्थानीय जनों की मदद से स्थल पर खुदाई कराई तो मंदिर से दूरी पर नाले के पास लगे पेड़ के नीचे जिलहरी के साथ शिवलिंग प्रकट हुआ। जिसके बाद शिवलिंग की प्राण प्रतिष्ठा कराई गई। मंदिर के लिए बरही निवासी मो. इलाही बक्श ने अपनी भूमि दान में दी थी। लोगों का कहना है कि जमीन से निकला शिवलिंग छोटा था लेकिन उसका आकार हर साल बढ़ता जा रहा है। विजयनाथ धाम मंदिर में हर सोमवार को भगवान का विशेष श्रंगार आरती होती है। महाशिवरात्रि पर शिव बारात निकाली जाती है।

पत्थरों से बना है 100 वर्ष पुराना ऊमरडोली डेम

बेजोड़ इंजीनियरिंग, 10 साल की कड़ी मेहनत और पत्थरों को तराशकर तैयार कराए गए ऊमरडोली डेम की खूबसूरती और इंजीनियरिंग को देखने दूर-दूर से लोग आते हैं। इतना ही नहीं अपने तरह का ऊमरडोली जलाशय प्रदेश का इकलौता आर्च डेम है। रीठी तहसील के बकलेहटा और चरगवां गांव के बीच में दो पहाड़ों को जोड़कर बनाए गए बोरीना जलाशय का निर्माण वर्ष 1914 में प्रारंभ हुआ था। पहाड़ों के पत्थरों को काटकर और तराशकर डेम को बनाने में 10 साल का समय लगा। 1520 फीट लंबे और 74 फीट ऊंचे जलाशय की कारीगरी और प्राकृतिक स्थल को देखने के साथ ही परिवार सहित लोग पिकनिक मनाने इस स्थान पर पहुंचते हैं। जंगल के बीच वन विभाग हर साल ट्रेकिंग का आयोजन भी करता है। आर्च डेम ऊमरडोली से लगा जंगल है, जो लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

शानदार नक्काशी का उदाहरण है बांधा इमलाज मंदिर

शानदार नक्काशी और पुरातन कलाकृति का नमूना जिले की रीठी तहसील का बांधा इमलाज राधा कृष्ण मंदिर लोगों की आस्था का केन्द्र है। लगभग 85 वर्ष पुराने मंदिर की नींव से लेकर गुम्बद तक के निर्माण में मात्र 15 हजार रुपए और 11 साल तक मालगुजारी में मिलने वाले अनाज का खर्चा आया था। बुजुर्ग बताते हैं कि मंदिर के निर्माण के दो वर्ष बाद सात दिनों तक जिले में लगातार बारिश का दौर चला था और उस दौरान कान्हा की मुरली की नाद लोगों को तीन दिन तक सुनने को मिली थी। तभी से चमत्कारिक मंदिर क्षेत्र को लोग लघु वृंदावन के नाम से पुकारते हैं। गांव के मालगुजार पं. गोरेलाल पाठक ने मंदिर की आधार शिला रखी थी लेकिन अल्प आयु में ही उनकी मृत्यु हो गई। जिसके बाद उनकी पत्नी भगौता देवी व पूना देवी ने उनके संकल्प को आगे बढ़ाने का काम किया। वर्ष 1924 में मंदिर का निर्माण पूरा हुआ था और मंदिर के निर्माण को लेकर कई कथाएं प्रचलित हैं। मंदिर में सालभर लोग पहुंचते हैं लेकिन जन्माष्टमी पर दूर-दूर से लोग दर्शन व मंदिर की सजावट देखने पहुंचते हैं।

पचमठा धाम के सांवले गणेश

जिले के ऐतिहासिक नगर विजयराघवगढ़ के पचमठा धाम में विराजे सांवले गणेश की प्रतिमा अपने आप में अनूठी है। काले पत्थर पर बनी प्रतिमा के दर्शनों को लोग दूर-दूर से आते हैं। गणेशजी की यह अद्भुत प्रतिमा विजयराघवगढ़ रियासत में 1826 में स्थापित कराई गई थी। विजयराघवगढ़ के महाराजा प्रयागदास ने वैदिक पद्धति से प्राण-प्रतिष्ठा कराई थी। गणेश मंदिर के अलावा तालाब के चारों ओर चार अन्य मंदिर भी स्थापित हैं। सांवले गणेश की प्रतिमा लोगों को जहां आकर्षित करती है तो मान्यता है कि भगवान गणेश यहां पर मनौती मांगने वालों की झोली भरते हैं।

कुंसरी की काली माता

ढीमरखेड़ा तहसील मुख्यालय से 23 किमी. दूर स्थित कुंसरी गांव में हिरण नदी के किनारे स्थापित काली माता का मंदिर वर्षों से लोगों की आस्था का केन्द्र है। लोगों का मानना है कि यह स्थान कोलकाता के काली मंदिर से जुड़ा हुआ है। यहां को लेकर मान्यता यह है कि गांव के बंशीलाल बागरी कभी कोलकाता काली मंदिर दर्शन करने गए थे लेकिन भीड़ के कारण वे अंदर नहीं जा पाए। तब उन्होंने कंुसरी की काली माता का ध्यान किया और अंदर से काली मंदिर के पुजारी ने व्यक्ति को भेजकर उन्हें अंदर बुलाया। कुंसरी में माता के दो स्थान हैं, एक हिरण नदी के किनारे और एक गांव के अंदर, जिनके दर्शनों का लोग दूर-दूर से आते हैं।

पाली में विराजी हैं 24 भुजी विरासिन माता

ढीमरखेड़ा तहसील के पाली गांव में 24 भुजी विरासिन माता का मंदिर प्रसिद्ध है। बिरसिंहपुर पाली की प्रतिमा अष्टभुजी है और छत्तीसगढ़ के हरवाह में स्थापित विरासिन माता की प्रतिमा दो भुजी है। इस लिहाज से ढीमरखेड़ा पाली में विराजी प्रतिमा अपने आप में अद्भुत है। मंदिर का इतिहास लगभग एक हजार साल पुराना बताया जाता है। जिला मुख्यालय से 100 किमी. जंगल में स्थित मंदिर में माता के दर्शन करने कई जिलों से लोग आते हैं। इस स्थान को पर्यटन विभाग ने अपने संरक्षण में लिया है और भव्य मंदिर के आसपास खुदाई में पुराना कुआं व मंदिर के अवशेष भी निकले थे। यहां को लेकर यह भी मान्यता है कि पहले माता लोगों को पैसा प्रदान करती थीं लेकिन काम पूरा होने के बाद अतिरिक्त पैसे रखकर लोगों को वापस करना होता था।

ब्रिटिश शासनकाल में बनी थी महादेवी माता की मढ़िया

ढीमरखेड़ा तहसील के दशरमन गांव में मां महादेवी का स्थान है। यहां पर माता को लोग शिला के रूप में पूजते हैं। लगभग 25 फीट ऊंची शिला को लेकर लोगों की मान्यता है, इसका कद हर साल बढ़ता जाता है। पहले यहां पर शिला मात्र 5 से 6 फीट की थी। लगभग 200 वर्ष पुराने स्थान पर अंग्रेजी शासनकाल में बनवाई गई छोटी से मढ़िया है, जिसके निर्माण के समय दूध व खून की धारा निकली तो काम बंद कर दिया गया था। कतला नदी के किनारे बने इस स्थान पर हर साल बसंत पंचमी को मेला लगता है। मां महादेवी का स्थान ढीमरखेड़ा के जंगलों के बीच है और प्राकृतिक स्थल का आनंद उठाने भी लोग यहां पर पहुंचते हैं।

मां शारदा देवी मंदिर विजयराघवगढ़

मां शारदा माता मैहर का जितना महत्व है, उतना ही महत्व जिले के विजयराघवगढ़ में विराजी मां शारदा का है। विजयराघवगढ़ में विराजी माता को मैहर माता की बड़ी बहन कहा जाता है। बताया जाता है कि मां शारदा राजा प्रयागदास के साथ कटनी जिले के विजयराघवगढ़ नगर वर्ष 1826 में पहुंचीं थी। तब से यहां पर रोजाना श्रद्धालु पहुंच रहे हैं। 1857 की क्रांति का प्रमुख हिस्सा रहा विजयराघवगढ़ नगर भक्ति के क्षेत्र में भी अनूठी अलख जगाए हुए है। राजा प्रयागदास द्वारा नगर में किले का निर्माण कराने के साथ ही मां शारदा के मंदिर की स्थापना कराई गई व कुएं, बावली, तालाब, पंचमठा, बगीचों का आदि का निर्माण कराया गया था। चैत्र व शारदीय दोनों ही नवरात्रों में यहां पर मेला लगता है और भक्तों की खासी भीड़ उमड़ती है।

चितरंजन शैल वन पार्क

आदि मानव के रहन, सहन, उनके हथियार, शिकार और जीवनशैली के 10 हजार वर्ष पुराने इतिहास को संजोये हुए है कटनी शहर। पाषाण युग की कलाकृति व अवशेषों से भरा पड़ा झिंझरी स्थित चितरंजन शैल वन इतिहास की अमिट छाप को संकलित किए हुए है। कलेक्ट्रेट से चंद कदमों की दूरी पर स्थित शैल वन में हजारों साल पुराने शैल चित्र हैं, जिनके माध्यम से हमारी पुरानी सभ्यता का ज्ञान होता है। हरी भरी वादियों के बीच चट्टानों में उकरी आकृतियां लोगों को आकर्षित करती हैं। यहां पर चट्टानों पर उभरी आदिमानवों की आकृति, आदिमानव के शिकार, रहने के स्थान, पैरों आदि के निशान, आदिमानव अवशेष संग्रहालय आदि देखने को मिलेगा।

शांति चाहिए तो आइए एकांत वन

शहर के वातावरण से दूर हरी भरी वादियां और शांति के साथ कुछ पल बिताने का मन हो तो आप झिंझरी स्थित वन विभाग के एकांत वन आ सकते हैं। घने पेड़ों के बीच यहां का शांत वातावरण लोगों को आकर्षित करता है। विभिन्न प्रजातियों के ऊंचे-ऊंचे वृक्षों के बीच परिवार के साथ लोग घूमने यहां पर आते हैं। जिला प्रशासन द्वारा यहां के लिए आगामी समय में अन्य योजनाएं भी तैयार कराई जा रही हैं। मुख्य मार्ग से लगे इस स्थल पर लोग घूमने के साथ ही पिकनिक मनाने भी पहुंचते हैं।

60 एकड़ में फैला है माधवनगर का जागृति पार्क

शहर के माधवनगर में कटनी पर्यावरण संधारण समिति द्वारा संचालित जागृति पार्क को ऑक्सीजन टैंक कहा जाता है। 60 एकड़ में फैले जागृति पार्क की आधारशिला शहर के चिकित्सक स्वर्गीय संजय निगम ने रखी थी। वर्ष 2009 में पार्क की स्थापना हुई और वर्तमान में 60 एकड़ में हरियाली के साथ ही विभिन्न प्रकार के मनोरंजन और ज्ञान की सामग्री यहां पर उपलब्ध है। बच्चों के लिए आकर्षक झूले, गाड़ियों के साथ ही योग केन्द्र, सेल्फी पाइंट यहां पर खास आकर्षण हैं तो बच्चों का ज्ञान बढ़ाने के लिए साइंस पार्क की भी यहां पर स्थापना है। आजादी पर्व पर पार्क के बीचों बीच 100 फीट ऊंचा तिरंगा भी लगाया है।

सुरम्य वादियों में बना है सुरम्य पार्क

नगर निगम ने भी शहरवासियों के मनोरंजन को लेकर कटाएघाट के पास सुरम्य पार्क का निर्माण कराया है। 30 वर्ष से अधिक पुराने सुरम्य पार्क में बच्चों के खेलने के लिए अलग-अलग झूले व अन्य साधन उपलब्ध हैं तो वोटिंग के साथ ही पार्क भ्रमण के लिए छुकछुक गाड़ी भी उपलब्ध है। हरी भरी वादियों के बीच बने पार्क में सालभर लोग पहुंचते हैं। यहां पर जिम और स्वीमिंग पूल की भी स्थापना नगर निगम ने की है। पार्क विशेष अवसरों पर लोग परिवार सहित पहुंचते हैं और पिकनिक मनाने के साथ ही पार्क में उपलब्ध साधनों से मनोरंजन भी करते हैं। कुछ ही दूरी पर कटनी नदी पर बना कटाएघाट एनीकट है। जहां पर वर्षों पुराने हनुमान मंदिर के साथ ही हरी भरी वादियों लोगों को आकर्षित करती हैं।

वसुधा फाल

प्राकृतिक छठा से भरपूर जिले का वसुधा फाल लोगों को विशेष रुप से आकर्षित करता है। रीठी तहसील के चारों ओर से घने जंगलों से घिरे वसुधा गांव में जंगल की वादियों के बीच सैकड़ों फीट की ऊंचाई से गिरता पानी और उसके बाद नीचे तालाब नुमा स्थान पर भरे पानी में नहाने का लुत्फ लोग उठाते हैं। वसुधा फाल की खूबसूरती को निहारने के लिए सालभर लोग यहां पर पहुंचते हैं। जंगल की वादियों का लुत्फ उठाने के साथ ही लोग यहां पर परिवार सहित पिकनिक का आनंद भी उठाते हैं।

खुसरा की खूबसूरत वादियां और प्राकृतिक कुंड

खुसरा की खूबसूरत वादियां और प्राकृतिक कुंड लोगों का खास आकर्षण है। रीठी तहसील मुख्यालय से लगभग 20 किमी. दूरी पर जंगलों के बीच स्थित खुसरा गांव चारों ओर से वन से घिरा है। गांव के नजदीक महादेव भगवान का स्थान पर जहां पर जंगल की गहराई में प्राकृतिक शिवलिंग स्थापित है। महादेव से जंगल का खूबसूरत नजारा हर किसी को आकर्षित करता है। जिले का पिकनिक स्पॉट होने के साथ ही खुसरा क्षेत्र में औषधीय भंडार भी है।

कौमी एकता का प्रतीक पीरबाबा, हनुमान मंदिर

शहर कौमी एकता मिसाल रहा है और इसी मिसाल का एक उदाहरण कटनी-जबलपुर मार्ग पर स्थित पीरबाबा है। पीरबाबा में सड़क के एक ओर जहां हजरत इत्रशाह बाबा की मजार है तो दूसरी ओर भगवान बजरंगबली का पुराना मंदिर स्थित है। जहां पर सभी वर्ग के लोग श्रद्धा से सिर झुकाते हैं। साल में एक बार भरने वाले पीरबाबा के उर्स में हर मजहब के लोग शामिल होते हैं।

बड़ेरा चतुर्युग मंदिर

चतुर्युग धाम बडेरा कटनी शहर का एक धार्मिक स्थल है। यह कटनी से मैहर मार्ग पर बड़ेरा गांव में स्थित है। चतुर्युग धाम बडेरा कटनी से करीब 15 किलोमीटर व राष्ट्रीय राजमार्ग से करीब 2 किलोमीटर दूर है। यहां पर आपको पांच मंजिलें देखने के लिए मिलती हैं, जो अलग-अलग युग को समर्पित है। यहां पर पहली मंजिल सतयुग को समार्पित है। दूसरी मंजिल त्रेता युग को, तीसरी मंजिल द्वापर युग को और चौथी मंजिल कलयुग को समार्पित है। सबसे ऊपरी मंजिल में मां दुर्गा मंदिर का मंदिर है।

कर्नल स्लीमन ने बसाया था स्लीमनाबाद

जिले का स्लीमनाबाद कस्बा अंग्रेज अधिकारी कर्नल हेनरी विलियम स्लीमन के नाम से बसा है। अंग्रेज अधिकारी को इस क्षेत्र का ठग गिरोह समाप्त करने के लिए भेजा गया था। वर्षों बाद आज भी कर्नल स्लीमन के वंशज इंग्लैंड से स्लीमनाबाद आते रहते हैं। स्लीमन की सातवीं पीढ़ी के परिजन कुछ वर्ष पूर्व स्लीमनाबाद आए थे। यहां पर वह पेड़ है, जिसपर ठगों को पकड़ने के बाद फांसी दी जाती थी तो स्लीमनाबाद थाना का पुराना भवन कर्नल स्लीमन की चौकी माना जाता है, जहां पर स्मारक के साथ ही स्लीमनाबाद की उत्पत्ति के संबंध में लेख भी दीवार पर अंकित किया गया है।

तिगवां में है गुप्तकालीन मंदिर

बहोरीबंद तहसील का तिगवां एक ऐतिहासिक जगह है। इस जगह पर पत्थर की शानदार नक्काशी देखने के लिए मिलती है। यहां पर कंकाली देवी का मंदिर भी है। कंकाली देवी का मंदिर छोटा व गुप्तकालीन मंदिर है और लगभग 5वीं शताब्दी में बना हुआ है। इसके सामने मंडप बना हुआ है और इसमें अलग-अलग कलाकृतियां देखने के लिए मिलती हैं। यहां पर विष्णु भगवान की प्रतिमाएं दीवार पर उकेरी गई हैं। तिगवां कंकाली देवी मंदिर बहोरीबंद तहसील से 5 किलोमीटर दूरी पर स्थित है और यह स्थल पुरातत्व विभाग के आधीन है।

घुघरा में उठाएं प्राकृतिक स्थल का आनंद

कटनी जिला मुख्यालय से लगभग 15 किमी. की दूरी पर प्राकृतिक वादियों के बीच स्थित घुघरा गांव के झरने का लुत्फ भी आप उठा सकते हैं। झरने का गिरता पानी और चारों ओर की हरियाली के साथ ही यहां पर संजय निकुंज नर्सरी भी स्थापित है। प्राकृतिक स्थल पर लोग परिवार सहित पिकनिक का आनंद लेने पहुंचते हैं।

शहर के नजदीक रहता है प्रवासी पक्षियों का डेरा

कटनी मुख्यालय से महज 8 किमी. की दूरी पर स्थित है जिले का पुराना सुरखी डेम। स्थल को जिला प्रशासन पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने में जुटा हुआ है। यहां की खासियत यह है कि शहर के नजदीक ही आपको प्रवासी पक्षियों को देखने का अवसर मिलेगा। पहाड़ के किनारे बने इस डेम के चारों ओर सौंदर्यीकरण कार्य भी जारी है।

आस्था का केन्द्र हरे माधव दरबार

शहर के माधवनगर में सतगुरु बाबा माधवशाह-बाबा नारायणशाह का गुरुद्वारा हरे माधव दरबार स्थापित है। गुरुद्वारे को लेकर देशभर में बसे समाज के लोगों की आस्था है। एक सिंधी समाज ही बल्कि हर समुदाय लोगों की इस गुरुद्वारे से आस्था जुड़ी हुई है। लगभग 75 वर्ष पुराने गुरुद्वारे में सबसे पहले बाबा माधवशाह, उनके बाद बाबा नारायण शाह, बाबा गोविंद शाह व बाबा मनोहर शाह गद्दीनशी थे। वर्तमान में बाबा ईश्वरशाह गद्दीनशी हैं। पूरे देशभर से श्रद्धालु गुरुद्वारे में सालभर पहुंचते हैं। इसके अलावा हर साल आयोजित होने वाले वर्सी महोत्सव में देश विदेश से श्रद्धालु पहुंचते हैं।

श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र बहोरीबंद

बहोरीबंद तहसील मुख्यालय से महज 2 किमी. की दूरी पर जैन समाज का तीर्थ स्थल श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र स्थित है। पुरा संपदा से भरपूर इस स्थान पर जैन समाज के 16वें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ की 16 फीट ऊंची प्रतिमा है। मुर्ति के पास ही शिलालेख भी हैं। पुरातत्व विशेषज्ञों के अनुसार बहोरीबंद का विशाल जैन मंदिर गुप्तकालीन कला के समकक्ष था। अतिशय क्षेत्र वर्षों से जैन समुदाय की आस्था का केन्द्र हैं और संतों के साथ ही बड़ी संख्या में लोग यहां पर भगवान शांतिनाथ का दर्शन पूजन करने पहुंचते हैं।

85 मंदिर, 13 बावड़ी से घिरी है पुष्पावती नगरी बिलहरी

जिले से महज 15 किलोमीटर दूर स्थित पुष्पावती नगरी बिलहरी 85 मंदिर और 13 बावड़ियों से घिरा है। यह स्थान न सिर्फ 945 ईसवीं के इतिहास को संजोये हुए है बल्कि यहां की पुरातात्विक धरोहरों की नक्काशी खुद ब खुद अतीत को बयां कर रही हैं। प्रतिदिन सवा मन सोना दान करने वाले दानवीर राजा कर्ण के इस स्थान का खास स्थान है। यहां पर बनी गढ़ी, किला, फांसीघर, काम कंदला के पत्थरों की शिल्प सम्मोहित तो करती ही है, साथ ही लक्ष्मण सागर तालाब का अलग सौंदर्य है। बिलहरी में स्थित प्राचीन विशाल मंदिरों के अलावा किले के अवशेष, फांसी देने का स्थान, रानी की सिंगार चौरी, बावली आदि स्थान भी दर्शनीय हैं। यहां पर चंडी देवी मंदिर को लेकर किवदंती है कि राजा कर्ण सूर्योदय से पूर्व स्नान करके चंडी देवी मंदिर जाते थे और वहां कड़ाहे में उबलते तेल में कूद जाते थे। देवी उन पर अमृत छिड़ककर जीवित करती थीं और ढाई मन सोना प्रदान करती थीं। देवी से प्राप्त सोना में से सवा मन सोना राजा सुबह गरीबों को दान में दिया करते थे। इसके अलावा बिलहरी में कलचुरी वंश का 10वीं शताब्दी का अभिलेख, कलचुरी शासक युवराज द्वितीय 980-990 ई का इतिहास, कलचुरी वंश की उत्पत्ति एवं प्रारम्भिक शासकों की जानकारी, माधवानल और कामकंदला की प्रेम गाथा, तरणतारण मंदिर, कल्चुरी शासक की प्राचीन गढ़ी, तपसी मठ, पुरातत्व का संग्रहालय, 85 मंदिर, 13 बावड़ी, गया कुंड, लक्ष्मण सागर तालाब, नौ देवियों के प्राचीन मंदिर, काल भैरव मंदिर, काम कंदला आदि दर्शनीय स्थल हैं।

■■

लोगों को आकर्षित करता है बरही का कोनिया धाम

जिले की बरही तहसील मुख्यालय से महज 10 किलोमीटर दूर स्थित मां कालीधाम कोनिया बाणसागर जल भराव क्षेत्र में स्थित है। चारों ओर भरा पानी, टापू और प्राकृतिक छटा का निहारने दूर-दूर से इस स्थान पर पहुंचते हैं। मां काली के मंदिर के साथ ही अन्य मंदिर यहां पर स्थापित हैं और प्रदेश के मुख्यमंत्री भी कोनिया धाम को पर्यटन स्थल के रुप में विकसित करने की घोषणा कर चुके हैं। जिसके बाद पर्यटन विभाग की टीम भी इस स्थान का दौरा कर पर्यटन की संभावनाओं को तलाश कर चुकी है। कोनिया धाम में महानदी की अथाह जल राशि लोगों को बरबस ही आकर्षित करती है और लोग परिवार के साथ इस स्थान घूमने और पिकनिक मनाने भी पहुंचते हैं।

प्रकृति प्रेमी हैं तो आइए शाहडार का जंगल

सतपुड़ा के घने जंगलों का जिक्र तो हमेशा से होता रहा है लेकिन कटनी जिले में घने और खूबसूरत जंगल की बात की जाए तो शाहडार के जंगल की चर्चा सबसे पहले आती है। यदि आप प्रकृति प्रेमी हैं तो शाहडार के खूबसूरत वनों का आनंद उठा सकते हैं। कटनी के साथ ही उमरिया और जबलपुर जिले की सीमा को छूता शाहडार का जंगल प्रकृति की सुंदरता से भरपूर है। इतना ही नहीं शांत वातावरण के साथ यहां पर आपको वन्य प्राणी भी बड़ी संख्या में देखने को मिलेंगे। जिसमें बारहसिंघा, चीतल, मोर, तेंदुआ, नीलगाय आदि शामिल हैं। उमरिया जिले की सीमा से लगे होने के कारण शाहडार के जंगलों में बाघों का भी मूवमेंट रहता है।

और भी हैं अनुपम स्थान...

- सतपुड़ा के घने जंगलों का जिक्र तो हमेशा से होता रहा है लेकिन कटनी जिले में घने और खूबसूरत जंगल की बात की जाए तो शाहडार के जंगल की चर्चा सबसे पहले आती है। यदि आप प्रकृति प्रेमी हैं तो शाहडार के खूबसूरत वनों का आनंद उठा सकते हैं।
- धार्मिक स्थलों की बात करें तो शहर के बीचों बीच वर्षों पुराना दक्षिणमुखी हनुमान मंदिर है। यहां पर सैकड़ों लोगों की आस्था है। मंगलवार व शनिवार के अलावा भी यहां पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं।
- अमकुही की वादियों में बना विश्राम बाबा काली मंदिर भी लोगों की आस्था के साथ ही नया पिकनिक स्पॉट है। पहाड़ी के किनारे बने काली मंदिर के साथ ही हरियाली के बीच लोग यहां पर पहुंचते हैं। यह स्थान मुख्य मार्ग पर कलेक्ट्रेट से चंद कदमों की दूरी पर स्थापित है।
- उमरियापान के नजदीक भरभरा आश्रम भी जिले के दर्शनीय स्थलों में शामिल है। संत बनवारी दास महाराज द्वारा स्थापित आश्रम की छटा अद्भुत है और बड़ी संख्या में यहां पर भी श्रद्धालु पहुंचते हैं।
- कन्हवारा से विजयराघवगढ़ मार्ग पर पहाड़ी पर मां काली का मंदिर स्थापित है। प्रकृति के बीच बने मंदिर को लेकर सैकड़ों लोगों की आस्था है।

मेले भी हैं मेल मिलाप का जरिया...

जिले में वर्षों पुराने मेले आज भी जीवित हैं। लोगों के मेलमिलाप का जरिया रहे मेलों में आज भी भीड़ उमड़ती है। जिले के पुराने मेलों के विषय में चर्चा करें तो बहोरीबंद के रुपनाथधाम में मकर संक्राति से लगने वाला मेला प्रमुख है तो बरही के विजयनाथधाम में बसंत पंचमी से महाशिवरात्रि तक हर साल मेला लगता है। रीठी के मुहांस में पुराने शिव मंदिर के पास भी बसंत पंचमी से मेले का आयोजन होता है। इसके अलावा मकर संक्रांति में पुष्पावती नगरी बिलहरी में भी मेले का आयोजन होता है। दशहरा पर्व पर उद्योगिक नगरी कैमोर में एक दिन का बड़ा मेला लगता है, यहां पर 100 फीट ऊंचे रावण का पुतला दहन होता है, जिसे देखने कई जिलों से लोग कैमोर पहुंचते हैं। हालांकि कोविड के चलते दो साल से आयोजनों पर रोक है।

कटनी से यहां पहुंचना भी आसान...

कटनी जिले के खूबसूरत व धार्मिक स्थानों के अलावा सैलानियों की कई पंसदीदा जगह हैं, जिनकी दूरी बहुत कम है। कटनी से ही उन स्थानों तक आने-जाने साधन उपलब्ध हैं। खजुराहो के विश्व प्रसिद्ध मंदिर, उमरिया जिले का टाइगर रिजर्व बांधवगढ़, पन्ना टाइगर रिजर्व, जबलपुर के भेड़ाघाट दर्शनीय स्थल जाना हो तो कटनी से यात्रा के लिए सहज साधन उपलब्ध हैं, 100 से 150 किमी. की दूरी तय कर आप इन स्थानों तक पहुंच सकते हैं। धार्मिक स्थलों की बात करें तो मां शारदा धाम मैहर कटनी से मात्र 65 किमी. की दूरी पर है तो जैन समुदाय की आस्था का केन्द्र कुंडलपुर भी यहां से जाना आसान है।

■■

जिला जनसम्पर्क कार्यालय कटनी

मध्यप्रदेश शासन

फॉलो करें, अपडेट रहें

Jansampark_katni
@Jansamparkk
/Dprokatni

Dprokatni.blogspot.com
@Jansamparkk
@Jansamparkkatni

@Collectorkatni
/Collectorkatni
@Collectorkatni

जिला जनसम्पर्क कार्यालय - कटनी (म.प्र.)
का ई- प्रकाशन
आकल्पन - हरीश किरार